कच्छ की आहीर ज्ञाति : पर्यटन के संदर्भमें

प्रा.डॉ.राजेश एम. जादव, कविश्री बोटादकर आर्टस् एवं कोमर्स कॉलेज, बोटाद

भारत भूमि विविधता एवम् विभिन्नता की जननी है । जैसी विविधता एवम् विभिन्नता भारत के प्रत्येक प्रदेश और हर क्षेत्र में पाई जाती है । उपर्युक्त 'गुजरात' और 'गुजरात' के 'कच्छ' जिले में संस्कारिता के सभर विभिन्नता वैसी ही जाती है । कच्छ की संस्कृति को गौरववंती बनाने में यहाँ के लोक समुदायों का विशेष प्रदान रहा है । उन समुदायों में एक 'आहीर' जाति भी एक है । 'आहीर' जाति की संस्कृति (Culture) वर्षो से यहाँ अछूती रही है । वह जाति अपनी सांस्कृतिकता गरीमा की धरोहर को आज भी आधुनिकता के आक्रमण के सामने विद्यमान है ।

भौगोलिक स्थान :

भारत के पश्चिम दिशा में स्थित 'कच्छ', 'गुजरात' राज्य के इतिहास में सदाय अहम् स्थान रहा है । वह जिला $22^0.44'$ एवम् $24^0.42'$ उत्तर अक्षांश और $68^0.10'$ एवम् $70^0.50'$ पूर्व रेखांश के बीच में स्थित है । 'कच्छ' के उत्तर में पाकिस्तान, पश्चिम में अरबी समुद्र है । दखन में 'कच्छ की खाडी' वह कच्छ को काठियावाड से अलग करती है । 'कच्छ' के उत्तर एवम् पूर्व भाग में कच्छ का रण (अनुक्रमें बडा और छोटा) स्थित है । 'कच्छ' जिला मेदानी विस्तार की दृष्टि से गुजरात राज्य के और भारत के लिए जिला के बाद का द्वितीय क्रम का जिला है । जिल में गांधीधाम, लखपत, अबडासा, नखत्राना, मांडवी, मुद्रा, भुज, अंजार, भचाऊँ, रापर आदी दश (10) तहसिल बने है । जिले का वहीवटी मथक भुज है । 'कच्छ' जिले में 8 शहर और 950 गाँव में लोग ज्यादा बसते है । जिले का कुल क्षेत्रफल 45,652 वर्ग कि.मी. है । उनमें 45376.44 वर्ग किमी विस्तार ग्रामीण एवम् शेष 275.56 वर्ग कि.मी. नगरीय है । वर्ष 2001 जनगणना के अनुसार कुल जन संख्या 15,83,225 पाईं है । 1991 की जनसंख्या से 25.4% वृद्धि पाई गईं है । यहाँ मुख्यत्वे कच्छी एवम् गुजराती भाषा बोली जाती है ।[1]

विभिन्न जातियों 'कच्छ' में :

'कच्छ' बरसों से अछूता मूलक रहा है । यहाँ पर विभिन्न मूलकों में से विभिन्न प्रजातियों आके बसवाट किया है । यहाँ प्रजातियाँ कोली, रबारी, मियाना, हरिजन एवं आहीर आदि प्रजातियाँ मुख्य थी । लेकिन सब से ज्यादा 'मियाना पट्टी' में पाई जाती है और वह आज भी वही बसवाट करती है ।

'आहिर' जाति भारत में :

भारत में लगभग 4 करोड 'आहीर' जाति की बसती है । [2] यह प्रजातियाँ गुजरात में नहीं लेकिन राजस्थान, महाराष्ट्र, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और नेपाल आदि क्षेत्र में पाई जाती है ।[3] आहीर जाति धनगर / गवणीनी पेटा ज्ञाति मानी जाती है । भारत में तराई में सब से ज्यादा बसती मौजूद है ।[4] गुजरात में आहिर

की ज्यादा बसति है । [5] गुजरात में आहीर की मुख्यत्वे पांच प्रजातियाँ है । 'मच्छु' नदी के किनारे बसे वह 'मरछोया' कहलाया । (2) 'सोरठ' में बसे वह सोरठीया कहलाये । (3) 'कच्छ' के वागड बिस्तार के 'पराथवर' पंथक में बसे वह 'परावथरिया' कहलाये । (4) 'पांचाल' में बसे वह 'पंचोळी' कहलाये एवम् 'बोरीया' आदी । भारत के कुल 108 करोड आहीर में से 3 लाख आहीर कच्छ में वसवाट करते है । वह जाति मुख्यालय किशान है । वह सब एक वक्त दूध और घी का विक्रय करते है । लेकिन बारीश की अनियमितता के कारण उन्होंने अपना व्यवसाय 'ट्रान्सपोर्ट' और 'नमक' के व्यवसाय को अपना लिया है ।[6]

कच्छ में आहीर जाति विभिन्न विस्तार में बसती है । परथारिया आहीर पूर्व कच्छ में बसते है । उन्होंने 'व्रजवाणी' नामक गाँव की स्थापना की थी । 'मच्छाया' और 'बोरीया' माहीर चोरड क्षेत्र में बसते (सातलपुर) 'परथारिया' आहीर चोबारी, राणावाव, अमरापर, रतनपर, खेगारपर, लोडाई, ध्रंग, धोरी, सुमेरासर, वांग, दादोर, कुनेरीया, नोखणीया, लाखापर और सतलपर में बसे है

मच्छोया आहीर पाधर, वाधुरा, रय्यर, पडाणा और भुवड गाँव में बसे है । 'सोरठीया' आहीर अंजार, नागोर एवम् शियाळी में बसे है । 'बोरीया' आहीर अंजार, मेघपर, बोरीची, मीठीरोहर, भारापरवीरा, मोडसर, खोखरा, कान्याबे, जुम्खा, बणदीया और केश में बसे है ।[7]

'आहीर' जाति की विभिन्न अटके :

कोठीवाव जिन्जाला सोरठीया कचोर जाटीया डोडीया
गराणीया नकुम बोरिया लावडिया जरू बडाय
वरू सिंधव मालशतर नंदाणीया मंद छात्रोडया
बेला जाली कातरीया बंधीया छैया लाखणोत्रा
बोदर करंगीया बलदानिया कुवाडीया बोरीया वाढिया
चेतरीया वोरखतरीया फायदी बारीया हुंबल पानेरा
गोगरा काछड चोटारा पांपणीया मैयड बेरा
जादव नागेया बाभणिया चावडा डव वछरा
डांगर मोर मियात्रा ढिला कारेया मारू
कल्सरिया गुर्जर सोलंकी वरचंद जाटीया भम्मर
कनावा धेवाडा बारड माता जींजणा आगडीया
छोटाणा मेता चंदेश उदरीया पिठीया मरंड
हडिया खाटरीया जोटवा कुवाड डेर लाडुमोर
डोलर जलु राम छांगा पंपाणिया भारवाडिया
जालन्धा घोयल भाटु मळगर कंडोरीया जोगल

वाणिया लादरका कामलीया जाणोंधरा जोडा गोजीया
श्यारा बालासरा रावलीया खमण करमूर पिंडारिया
लडक गरचर नाधेरा गागल आंबलीया लौखिल
परडवा खादा पटाट मकवाणा लावडीया

'आहीर' शब्द का अर्थ :

एक मतानुसार अहीर शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'अहैरी' पर से माना जाता है । संस्कृत में 'अहैरी' यानी 'शिकार करना' ऐसा अर्थ माना जाता है । वह 'आहीर' जाति को देखते अनुवाद में सही नही बैठता । [9] भगवत गो-मंडल भाग-2 में 'आहीर' का विभिन्न अर्थ दिया है । जैसे के 'आहीर' उस नाम की गोपाल की एक जात, बाबरी से मिलती जाति का गोपाल, गोप, भरवाड, रबारी, एवं उस नाम की भरवाड जाति को मानस आदी अर्थे दिये है ।[10] आम तोर पे 'आयर' और 'आहीर' एक ही जाति है । लेकिन जन भाषा में 'आहीर' या 'अहीर' को आया नाम से पहचाना जाता है ।[11] 'मनुस्मृति' में उल्लेख के अनुसार वह 'क्षत्रिय' पिता और वैश्य माता की संतति मानी जाती है । इतिहासकारो के मत अनुसार ऐलेक जेन्डर (325 ई.पू.) के आक्रमण वक्त 'मुरी' (Muri) और 'मुरगाला' (Murgala) कि गिरीमाला के बीच प्रदेश में अभिसार कि राजसत्ता थी । ग्रीक इतिहासकार के बीच प्रदेश में 'अभिसार', 'आहीर' की बाडी थी । प्राचीन भारत में उल्लेखित 'आभीर' वही ही 'आहीर' है । ऐसा माना जाता है कि संस्कृत शब्द 'आभीर' अपभ्रंश हो के 'आहीर' शब्द हुवा होगा ।"[12]

'आहीर' कच्छ में :

'कच्छ' में आहीर जाति आ के बसी उसके बारे में अनेक मत है । ऐसे मत है कि आभीरों की उत्पत्ति सिंघ के सूमरा वंश से हुई ऐसा माना जाता है । कर्यु की दीव के सोलंकी के साथ, दक्षिण के काठियावाड के 'वाला' के साथ एवम् उज्जेन के परमारों के साथ वह बेटी व्यवहार रखते थे । और आज भी सोरठ के नाघरा, आदरो, काठी और हाटी रजपूतों के साथ बेटी व्यवहार है । दूसरा मत है कि 'आहीर' मूलतः गाय की टोली के साथ भटकती यादवों की ही एक शाखा है । वे 'आभीरों' के नाम से पहचानी जाती है । दुर्गाप्रसाद शास्त्री के मतानुसार - "महाभारत में परशुराम के भय से जिन क्षत्रियों ने अपना कर्तव्य छोड दिया वे 'आभीर' थे । इस लिये मूलतः यादव और दूसरे क्षत्रियों, क्षात्रकर्म छोड के गोपालन आदी कर्म स्वीकार कर लेने से आभीर कहलाने लगे होंगे और उन्होंने फिर से क्षात्रकर्म स्वीकार कर लेने से रजपूत हुए थे । वह आभीर 'योंधेयो' और अजुना यरो' आदी उस पे उत्तर से हमले से सिन्ध वहाँ से कच्छ, काठियावाड में आयें । एक मत ये है कि 'आहीर' अपने को चंद्रवंशी एवं यदूकुल के कहलाते हैं । मूलतः उत्तर हिन्दुस्तान में गंगा-यमूना किनारे बसती प्रजा थी । वह लडायक कोम वैसी ही मजबूत थी । उनकी रग-रग में वीरता और नीति थी । बारोटो के पास से आहीरो की वारता की दंतकथाएं मिलती है । उनमें से एक दंतकथा अनुसार आहीर वे राजा सार्थकी राज

परिवार है । सार्थकी पिता नहुश महापराक्रमी राजा था । उनको इन्द्रलोक में आवागमन करने का वरदान प्राप्त था । दूसरे मत अनुसार चन्द्रवंशी क्षत्रिय ययाती का पुत्र यदू महापराक्रमी था । उसने नागवंशी राजा को पराजीत किया था । इस लिए वह आहीर कहलाये । अहीर शब्द में 'अही' यानी 'नाग' और 'इर' यानी 'कपायमान करना' यानी के 'आहीर' मतलब नाग को वश करनार ऐसा अर्थ होता है । उन्होंने नाग लोगों को वश किया इसलिए राजा ने 'अहीर' की उपमा दी और अहीरनंद से प्रसिद्ध हुए । वह वंश 'अहीर' से पहचाने गये ।'

महाभारत काल में गोकुल में 'अहीरनंद' वंश में नंद नामे महापराक्रमी पुरुष हुआ । उनके पास लाखों गायें थी । उस समय मथुरा में राजा कंस राज करता था । उसने अपनी बहन एवं बहनोई वासुदेव को केद कर दिया था । देवकी के सात संतानों को उसने जन्म के साथ ही मार डाला था । आठवें बालक को बचाने के हेतु से वासुदेव गोकुल में नंद के घर रख आये । श्रीकृष्ण आहीर का साथ ले के जूल्मी राजा कंस का वध कर दिया । मथुरा की गद्दी में राजा उग्रसेन को बिठाकर कृष्ण द्वारिका कि और प्रयाण किया । जहाँ-जहाँ रसीत और फलद्रुप जमीन पाई, वहाँ-वहाँ आहीर लोगों को बसने के लिये समझाये गए । गोकुल-मथुरा से निकल कर वह सौराष्ट्र पहुँचने तक श्रीकृष्ण पाँच जगह (Place) पर रुके थे । वह पाँच (Five) जगह (Place) को आहीर 'तीर्थ' मानते है । रास्ते में जिन-जिन स्थलों में वह स्थिर हुई । उस स्थलों के नामों से ही उनकी पेटाज्ञाति से पहचान गये ।

सौराष्ट्र प्रदेश में वह आके आहीर 'मच्छु' नदी के किनारे बसे तो वह 'मच्छुया आहीर' से जाने गये । पांचाल प्रदेश में आ के बसे तो वह 'मच्छुया आहीर' से जाने गये । पांचाल प्रदेश में आ के बसे, वह 'आहीर', सोरठ प्रदेश में बसे वह 'सोरठीया आहीर' नाधेर प्रदेश में बसे वह 'नाधेरा आहीर' कहलाये, वागड प्रदेश में से गोहिलवाड में जा के बसे वह 'वागडीया आहीर' और कच्छ में बसे तो वणार आहीर कहलाये । लेकिन वणार जाति आम तोर पे मूलतः 'जोधपुर' की ओर से कच्छ में आके बसे ऐसा माना जाता है ।[13]

कच्छ में बसते प्राथणिया आहीर की बस्ती चोबारी, रामवाव, खडीर, अमरापर, खेंगार पर आंजेडी, थाणेटी, लोडाई, धंग, ढोरी, सुमरापर, वंग, डाकोर, कुनरिया, नोखानिया, सत्तापर आदी 64 गाँव में बसे है । पथ्थर विभाग में '15', वाधुरा विभाग में '21', टप्पर विभाग में '11', पडाणा विभाग में '14' और भूवडे विभाग में '13' गाँव में आके बसे है । रतनाल और टप्पर प्रदेश में 'प्राथणिया' एवम् 'मच्छोया आहीर' बसे है । राज्य की ओर से कच्छ सीमा पर आके सेल खारी और गोड पर गाँव आहीर कुटुंब एकट्ठे आके बसे । इस लिए खावडा का 'पथाण' आज भी 'आहीर' जाति का 'पादर' नाम से जाना जाता है ।[14]

आज भी कच्छ में आहीर जाति विभिन्न प्रदेश में बसती है और वह अपनी सांस्कृतियकता को संभाले हुए आज भी विद्यमान है ।

आहीर जाति की सांस्कृतिता :

पुरुषो के आभूषण :

आहीर खमीरवंती जाती है और वैसा ही उनका रंगो से सुशोभित पोशाक है । पुरुषे पासबंधी केडिया, नीचे के भाग में नालीवाली चोरणी, शीर पे घेरदार । पघडी पैर में देशी घाट का फूडदीवाले जूते आदी पहेनते है । भिन्न-भिन्न आहीर जाति के लोगों के पोशाक एक-दूसरे से भिन्न होते है । उनके पोशाक की विशिष्टता एक आहलाद्क रंग जमाती है । इस लिए वर्तमान समय में प्रवासी (Tourist) के लिए आकर्षण का केन्द्र बन सकता है और पर्यटन (Tourism) के विकास का उपयोगी माध्यम बन सकता है ।

पघडी :

आहीर जाती की पघडी बहोत अच्छी होती है । उनकी पघडी पंद्रह एक लंबी चोरस पाना की, वार सवावार फैली पहोळी और रस्सी जैसा वण चढ़ी हुई होती है । प्रौढ़ उम्र के आहीर लोग सफेद रंग की पघडी पहनना पसंद करते है । रंगीले आहीर लोग रंगीन फूल वायल जैसी पहनना पसंद करते है । आम तोर पे विभिन्न आहीर जाति के लोग तरह-तरह की पघडी पहनते है । जैसे की चक्कर-चक्कर वणवाळी बड़ी, कृष्ण के मुगर आकार की कारवालें धोती की पघडी, लाल का गुदा रंग की कोरवाली पघडी, पचीस हाथ लम्बी पघडी, आठ से दश हाथ की गोल आटेवाली पघडी, भातवाली पघडी और सफेद पघडी आदी पहनते है । इसी पघडी से आहीर जाति की पेटाजाति कौन सी है ये भी पहचानी जाती है । [15] ये प्रवासी (Tourist) लिये अनुभव के लिए और आकर्षित करने का माध्यम बन सकती है ।

केडिया :

आहीर जाति के लोग तरह-तरह के आकार के केडिया पहनते है । जैसे के वह शरीर पे शीरबंद केडियुं, कस और कहल (चुड) वाले केडिया, पीठ भाग में भूरे रंग का केडिया, भरत भरा हुआ केडिया और करचलीवाला केडिया आदी पहनते है . उसकी छाप लगभग आधाकर ज्यादा लम्बी होती है । वह प्रवासी Tourist के लिए एक नया पन लगेगा और इसी लिए पर्यटन के लिये महत्त्व का माध्यम बन सकता है ।[16]

चोरना :

आहीर जाती शरीर ऊपर के भाग में केडिया पहनते है, और नीचे के भाग में बटनवाली, डोरणवाला चोरणा 'सराई चारणा' चार पाटा चारणा डोरवाले और कडीवाले चारणे पहनते है । जब की कम्मर के भाग में भेट बांधते जो सुंदर सा दृश्य खड़ा करता है । जो प्रभासी को रोमांचक अनुभव कराता है और वह भी उसका अनुभव करने के लिये प्रवृत्त बनता है । इस लिये वह पर्यटन (Tourism) के उपयोगी बन सकता है ।[17]

पुरुष के आभूषण :

आहीर जाति के पुरूष पोषाक के शोखीन है, साथ-साथ आभूषण के भी शोखीन है । जैसे के पुरूषों कान में सोने के दो-दो तोले के फूल, बोरीया, डोडीया, हाथों में रूपे के कडे कान में भूगली और डोक में सोने के

गठडे (गंठा) या सोने की कांठली एवम् मुकेड में कंदोरा और हाथ में रूपे के कडे पहनते है । भिन्न-भिन्न आहीर जाति के आयरों, चापका, कोकरवा, हाथ की उँगलियों के वेढला पहनते है । जब की अन्य आभूषणों में दुम, चोरसी, झूमका, कोढली, आदी पहनते है । जबकी छोटे-छोटे बच्चे हाथ में चांदी का नकोर सरण पहनते है । इस सब खासियतों पर्यटन(Tourism) और प्रवासी(Tourist) को ज्यादा प्रभावित कर सकती है और पर्यटन (Tourism) को विकसाने के लिए महत्त्व का माध्यम बन सकती है ।

आहीर स्त्रीओं के आभूषण :

जैसे आहीर जाति के आहीर पोशाक और आभूषण पहनते हैं । वैसा ही सुंदर और कलात्मक 'आयरराणी' आभूषण पहनती है । जो उसके रूप रंग को अधिक आकर्षित पहनती है । जो उसके रूप रंग को और अधिक आकर्षित बना देती है । आहीरराणी के पोशाक अनेक भात निपजाने वाले होते है । 'आहीरराणी' का ओढना, कापडी और जीजा उनका मुख्यत्व पोशाक है ।

ओढनी :

ओढणों तरीके उपयोग होने वाला वस्त्र मूल में धाबला, वे घेर लाल या काले रंग की 'उन' की बहार से भरत और आभलावाली जाडी धाबणी और शरीर में चुमकीवाली लाल-लीला रंग की लम्बी छाण के पीछे से खुल्ली लेकिन कस वाली होती है ।

कापडी :

आहीरराणी भिन्न-भिन्न रंग के अलग-अलग कीनखाज के कपडे पहेनती है, जीसे कापडी कहते है । और उस में भरत भरला सांभला और सतारा लगायें होते है । वह प्रवासी (Tourist) और पर्यटन(Tourism) के लिए आकर्षण का केन्द्र बन सकता है । प्रवासी (Tourist) और पर्यटन (Tourism) बढाके लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता है ।

जामी :

आहीर जाति की नारीयों जीमी पहेनती है । उसको लोग पहेरणु कहते है । यह जीमी (पहेरणु) धोती जैसी लाल रंग की सुतराउ कापड की होती है । लेकिन वह जाडा होने से 'पहेरणा' से जाना जाता है और वह जीना हो तो वह 'जीमी' से पहचाना जाता है । ऐसा कहा जाता है कि घेरदार घाघरे हो तो समज जाना वह आयरराणी है । वह त्यौहारों में ओढने की जगह पे घाट पहनती है । वह भी लाल हरे रंग का मिलावटवाला सफेद टिपकीवाला होता है । अंक के भाग में सोनेरी पट्टीवाली फरती किनार होती है । लेकिन जब उनकी शादी होती है । तब वह सब छोड के ओढणे, कापडा और जीमी पहनती है । [18] सब से ज्यादा कच्छ की मच्छुया आहीर की स्त्रीओं के हाथ में बंगडी, बलीया, पहेनती नहीं है । जब की वागडीआ आयरों में पाँव में अनरीत साठ भार की चांदी की कांबी और सोर भार का कडला, डोक में दोरे-पारा, नाक में नथ और कान में वेढला

पोरवानी आदी पहेनती है । जो प्रवासी (Tourist) को आकर्षित, अनुभव और रोमांचीत करने के लिए उपयोगी बन सकता है।[19]

उपर्युक्त आहीर जाति की संस्कारिता, पहेरवेश और जीवनशैली पर्यटन उद्योग के लिये उपयोगी बन सकता है । इसे प्रवासी को ज्यादा आकर्षित कर सकते है । लेकिन इस के लिये हमें उनको पर्यटन की दृष्टि से समजाना पडेगा और तैयार करना पडेगा । जिससे वह गाँव में सब सुविधा प्राप्त कर सके ।

इसलिए आहीर जाति को पर्यटन संदर्भ सही तरह से तैयार करेंगे तो ज्यादा विदेशी को आकर्षित कर सकेगे । जिससे ज्यादा विदेशी हूंडियामण प्राप्त कर सके और हमारा राज्य और देश का जी.डी.पी. ग्रोथ बढाने में उपयोगी साबित हो सकेगा एवं आहीर जाति की संस्कारिता को भावी पेढी के लिए संरक्षण और संवर्धन भी हो सकेगा ।

संदर्भग्रंथ सूचि

1. Census of India-2001, Gujarat (Administrative Altas) Government of India, New Delhi-2006, P.36
2. http ://guj.wikipedia./wiki/
3. उपर्युक्त
4. उपर्युक्त
5. उपर्युक्त, P.2
6. उपर्युक्त
7. उपर्युक्त, P.3
8. उपर्युक्त, P.1,2
9. जयंतिभाई आहीर, आहीर कथा मृत (यदूवंशीओं का इतिहास), प्रवीण प्रकाशन प्रा.लि., राजकोट-2012, द्वितीय संस्करण-71
10. भगवतजी सिंहजी, भगवदगोमंडल, भाग-2, (आ.ऐ, औ), प्रवीण प्रकाशन प्रा.लि., राजकोट-2007, द्वितीय संस्करण पृ.1169
11. जे. एम. अलकाण, सौराष्ट्र की पछात-कोमे भाग-2, सौराष्ट्र पछात वर्ग बोर्ड, मुंबई राज्य, पृ.198
12. उपर्युक्त, पृ.197
13. उपर्युक्त, पृ.198
14. उपर्युक्त, पृ.199, 205
15. प्रमोद जेठी, कच्छ के आहीर, वर्ष-34, अंक-12, सितम्बर-1995, पृ.14
16. जे. एम., मलकाण, उपर्युक्त, पृ.210,212

17. उपर्युक्त, पृ.212,213
18. उपर्युक्त, पृ.214, 215, 216
19. डॉ. हसुताबेन शशीकांत संदाणी, गुजरात की लोक : संस्कृति, युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य, अहमदाबाद, 2001, प्रथम, पृ.34

Author: प्रा.डॉ.राजेश एम. जादव, कविश्री बोटादकर आर्टस् एवं कोमर्स कॉलेज, बोटाद